

श

1. श = शय in गिरिश, वारिश und वृत्तश.

2. श m. 1) = शस्त्र. — 2) = शिव ÇABDAR. im ÇKDr.

शय (von ५. शम्) adj. P. 5, 2, 138. Vop. 7, 31. धुरोः शयम् N. eines Sa-man Ind. St. 3, 220, b.

शयु (wie eben) 1) adj. P. 5, 2, 138. Vop. 7, 31. a) etwa wohlwollend, wohlthätig: तच्छयोः सुममीमहे RV. 1, 43, 4. शोमानं शयोर्ममकाय सूनवे वक्तम् 34, 6. शयुं स्व मंहिष्ठा 10, 143, 6. शयेर्दिवानां सुध्यान्मा देवानां मपसंष्टिस्महि TS. 1, 2, 20, 2. Vishnu 6, 4, 3. — b) dem es wohlgeht, glücklich Taitt. 3, 1, 24. Bhāṭṭ. 4, 18. Verz. d. Oxf. H. 44, a, 5. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Brhaspati TS. 2, 6, 20, 1. 5, 2, 20, 4. TBr. 3, 3, 2, 11. Çat. Br. 1, 9, 2, 24. Taitt. Âr. 1, 5, 2. MBh. 3, 14131. Verz. d. Oxf. H. 56, b, 41.

शयुवाक m. so v. a. das richtig gebildete शयोर्वाक AÇv. Ça. 1, 5, 26. 10, 1, 6, 11, 8.

शयोर्वाक m. die mit den Worten तच्छं योरा वृणीमहे (z. B. TBr. 3, 5, 22, 1) beginnende heilige Formel Çat. Br. 11, 2, 2, 5. 2, 9, 2, 29. Çāṇkh. Ça. 1, 14, 23. 3, 8, 20. Kāṭh. Ça. 9, 12, 1.

शयौस् 1) = शं योस् VS. 3, 43; vgl. u. योस्. — 2) die mit den Worten तच्छं योरा वृणीमहे beginnende heilige Formel: शयौर्ब्रूहि TBr. 3, 3, 2, 11. अथ शयोरारु Çat. Br. 1, 9, 2, 24. 2, 18. 6, 2, 47. Kāṭh. Ça. 3, 6, 16.

शय्वत्स adj. mit dem शयोस्-Spruch schliessend Ait. Br. 3, 45. Çat. Br. 3, 2, 2, 23. 8, 5, 2, 20. 11, 2, 2, 25. Kāṭh. Ça. 3, 7, 13. 5, 9, 32. Âçv. Ça. 4, 3, 2.

शव (von ५. शम्) Vop. 7, 31. m. = मुषलायस्थलौकमापलक und वज्र DHAR. im ÇKDr. — Vgl. शम्ब.

शवद् (५. शम् + वद्) m. (संज्ञायाम्) P. 3, 2, 14. Schol.

शवत् (von ५. शम्) adj. P. 8, 2, 9. Schol. das Wort शम् enthaltend Verz. d. Oxf. H. 296, b, No. 723.

शवर s. शम्बर.

शवूक m. = शम्बूक H. 1208. Schol.

शंस्, शंसति Nāg. 3, 14 (अर्चतिकर्मन्). Dātup. 17, 19 (स्तुतो; nach

Andern auch डुर्गती und हिंसायाम्: शंसिषम्, शंसिषुस्, (समाशस्त 2. pl.; शशंस, (आशंसुस् MBh.) शंसिष्यति; im Epos auch med. शंसते, शशंसि (समाशंसिरे MBh.); absol. शस्त्वा, °शस्य; शंसितुम्: pass. शस्यते, शंसि; partic. शस्ते und शंसित (selten) s. bes. 1) laut und feierlich auftragen, recitiren; insbes. das Aussprechen eines an Götter gerichteten Liedes oder Spruchs: देवाय शस्ति शंस RV. 4, 3, 3. मह्वान् 1, 67, 4. वचः 8, 8, 11. निवर्चनानि 9, 97, 2. उक्था 6, 23, 5. 24, 7. 29, 4. 7, 19, 9. 56, 23. स्तोमासः शस्यमाना उक्थे: 6, 69, 3. 4, 4, 15. न डुष्टुतिः शस्यते 1, 53, 1. धीतिः 110, 1. मन्म 2, 4, 8. ब्रह्म 4, 58, 2. गिरः शस्यमाना: 6, 69, 2. 5, 55, 8. 10, 66, 12. 148, 4. शंसिषुं नु ते अपिकर्णे 6, 48, 16. Ait. Br. 2, 38. Im Ritual von der Recitation des Hotar: शंसवाघर्षो प्रति मे गृणीहि RV. 3, 53, 3. 4, 7. 2, 43, 2. निविद् शस्त्वा सूक्तं शंसति Ait. Br. 2, 38. 38. तूष्णीशंसम् 39, 3. 31. 5, 14. 6, 8. 30. शस्त्रम् 24. ऋग्भिः Nir. 13, 7. अशंसिषुर्ब्रूवः Çat. Br. 4, 6, 20. 3, 2, 1. 6. 10, 5, 2. 3. उच्चैर्हता शंसति 11, 5, 5, 10. स्तोत्रियम् Çāṇkh. Ça. 9, 5, 3. धाय्याम् 11, 12, 2. मन्त्राव्रतम् 16, 20, 10. वृत्तोम् Kāṭh. Ça. 7, 25, 6. पक्के गायत्रीम् P. 6, 3, 55. Schol. शंसतमनुशंसति ब्रूवाः शस्त्रकोविदाः Kūlikop. in Ind. St. 9, 14. Aus शंसाव variirt ist in den Litaneien शंसावा, शशंसावा, शंसाव Çāṇkh. Br. 14, 3. Kāṭh. Ça. 9, 13, 29 und sonst. शंसामो ähnlich Çāṇkh. Br. 14, 3; vgl. शो शामिति शस्त्राणि शंसति Taitt. Up. 1, 8, 1. absol. शंसम् Çāṇkh. Ça. 12, 16, 2. गायत्री 1. जगती 11, 15, 11. पङ्क्ति 10, 6, 5. निविच्छंसम् 20. — 2) loben, preisen, rühmen: शंसा मन्त्रमन्त्रम् RV. 3, 49, 1. 6, 5, 6. 7, 61, 4. शंसते स्तुवते शंभविष्ठा 6, 62, 5. 4, 51, 7. 10, 99, 9. RV. Prāt. 11, 38. संन्यासं कर्मणाम् Bhag. 5, 1. MBh. 2, 1593. Kām. Nitis. 6, 7. Spr. (II) 506. (I) 2046. Rīgā-Tar. 5, 435. Bhāg. P. 1, 9, 45. 3, 16, 28. 4, 5, 25. 22, 48. 8, 4, 1. 12, 42. साधु साधिति शंसताम् (partic.) R. Gorr. 1, 3, 55. साधु साधिति भूतानि शशंसुमारुतात्मजम् 5, 6, 29. शशंसुर्दोषदीं तत्र कुत्सतो धृतराष्ट्रजम् MBh. 2, 2298. Bhāg. P. 4, 7, 12. 9, 51. शशंसिरे 8, 7, 45. भवेदापत्सु यन्मित्रं तन्मित्रं शस्यते बुधैः Hariv. 10004. उद्यतस्य हि कामस्य प्रतिवादा न शस्यते Spr. (II) 1243. 1303. Bhāg. P. 4, 17, 28. rühmen so v. a. für günstig —, für ein gutes Omen halten Varāṇh. Bhāg. S. 24, 12. 54, 123. 56, 9. — 3) geloben, anwünschen: सूर्या यत्पत्ये शंसंती मनसा सवितादेदात् RV. 10, 85, 9. शंसामि पित्रे अमुराय शवम् 124, 3.

*) Was man unter श vermisst, suche man unter ष oder स.

VII. Theil.

1